रामनवमी पर्व और हमारी सांस्कृतिक परम्परा

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

प्रतिवर्ष नये विक्रम संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को होता है और उसके आठ दिन बाद ही चैत्र शुक्ला नवमी को एक ऐसा पर्व समस्त देश में मनाया जाता है, जिसका सांस्कृतिक महत्व अनेक शताब्दियों से अक्षुण्ण बना हुआ है। यह पर्व है रामजन्मोत्सव का जिसे सारे देश में रामनवमी के नाम से जाना जाता है। यह मान्यता है कि त्रेतायुग में इसी दिन दशरथ के राजमहलों में भगवान् राम का जन्म हुआ था।

राम और कृष्ण दो ऐसी परात्पर महिमाशाली विभूतियाँ इस देश की रहीं हैं, जिनका अमिट प्रभाव समूचे भारत के जनमानस पर सदियों से अनवरत चला आ रहा है। सारा देश इन्हें ईश्वर, भगवान् और परमाराध्य के रूप में देखता रहा है। विभिन्न युगों में विभिन्न दृष्टियों से इनकी महिमा गायी गयी है। जिस युग में उपनिषदों के ब्रह्मवाद का बोलबाला था, उस युग में इन्हें साक्षात् परम ब्रह्म के रूप में महिमामंडित किया गया, जब वैष्णव भक्ति का आन्दोलन चला तब इन्हें भगवान विष्णु का अवतार मान कर पूजा गया और जब धार्मिक आचार और नैतिक मूल्यों की स्थापना की आवश्यकता अनुभव हुई, तब इन्हें साक्षात् धर्म मान कर आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। किसी भी देश के जनमानस पर किसी भी उदात्ततम चरित्र का इतनी सदियों तक अक्षुण्ण साम्राज्य रहा हो, ऐसा उदाहरण और कहीं शायद ही देखने को मिले।

इन दो महानायकों में कृष्ण को लीला-पुरुषोत्तम और राम को मर्यादा-पुरुषोत्तम कहा जाता है। मर्यादा और आदर्श की स्थापना के लिये राम का नाम सहस्राब्दियों से लिया जाता रहा है। राम का नाम न जाने कितने युगों के कंठों में परमात्मा का पर्याय बनकर गूंजा है, न जाने कितने काव्य, महाकाव्य और स्तोत्र एवं नाटक रामकथा पर लिखे गये हैं। भारत की ऋषिप्रज्ञा ने सदियों पूर्व कहा था 'रामो विग्रहवान् धर्मः।' राम धर्म के मूर्त रूप हैं।

इसका आशय यही है कि राम के चरित्र में इस देश के, प्रजा के, भाई के, मित्र के, संक्षेप में समस्त भारतीय आचार के आदर्श देखे थे। राम आदर्श राजा थे। तभी तो रामराज्य का मुहावरा आज तक जनमानस में जीवन्त है। राम आदर्श पुत्र थे, जिन्होंने पिता की प्रतिष्ठा के लिये राजपाट भी छोड़ दिया था। राम आदर्श भ्राता थे, जिन्होंने भरत को सारा राज्य सँभला दिया था। आदर्श सखा थे– जिन्होंने विभीषण और सुग्रीव जैसे मित्रों को खोया भाग्य लौटाकर सौंप दिया था। राम आदर्श स्वामी थे, जिनके सेवक बनकर हनुमान स्वयं भगवान बन गये।

इन सभी आदर्शों की स्थापना अपने चरित्र द्वारा करने वाले राम मर्यादा–पुरुषोत्तम भी हैं तथा विग्रहवान् धर्म भी। तभी तो इनके चरित्र का गुणगान कर न केवल रामायण के प्रणेता वाल्मीकि युगविभूति बन गये अपितु सहस्राब्दियों तक कालिदास से लेकर तुलसीदास और मैथिलीशरण गुप्त तक भारतीय भाषाओं के कवि इनकी यशोगाथा गाकर स्वयं अमर हो गये। गुप्त जी ने ठीक कहा है–

'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।

कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।'

राम के चरित्र की एक विशेषता यह भी है कि वे जनमानस के अन्तरतम में आत्मा के पर्याय के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके नाम की यह छाप सभी भारतीय भाषाओं में देखी जा सकती है। हिन्दी में जब हम कहते हैं कि 'हमारा राम यह स्वीकार नहीं करता, या हम अपनी रामकहानी कह दें' – तो उसका अर्थ होता है, 'हमारी आत्मा यह स्वीकार नहीं करती, हम अपनी कहानी कह दें।' आत्मकथा को हम रामकहानी कहते हैं। इन मुहावरों में राम आत्मा के पर्याय बन कर किस प्रकार जन जन के अन्त:करण में आसीन हैं, यह स्पष्ट देखा जा सकता है। प्राय: इलाज को रामबाण औषधि कहा जाता है। राम का बाण कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। इसी प्रकार राम की कथनी और करनी एक होती है। 'रामो द्विर्नाभिभाषते।' राम केवल एक बार ही बाण चलाते हैं और एक बार ही बोलते हैं। उनका बाण अमोघ और उनकी वाणी पत्थर की लीक होती है।

तभी तो राम और रावण की गाथा के चरित्र सारे भारत की संस्कृति में, लोकाख्यानों में, जनजीवन की सांस्कृतिक मान्यताओं में, साहित्य में, कला में और कंठ में किसी न किसी मूल्य के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हो कर इस धरा को एक सांस्कृतिक सूत्र में पिरोये हुए हैं। उत्तर–दक्षिण, पूरब–पश्चिम सभी क्षेत्रों की भारतीय भाषाओं में राम आदर्श चरित्र के प्रतीक बने हुये है। रावण दंभ का, कुंभकर्ण आलस्य और निद्रा का, हनुमान सेवा का प्रतीक बने हुए हैं। सीता को आदर्श पत्नी, भरत को आदर्श भ्राता यहाँ तक कि विभीषण को घर का भेदी

मानने की परंपरा सभी क्षेत्रों में कितनी सदियों से जनमानस में रच बस गई है। इसी रामकथा का प्रसार भारत से बाहर थाईलैंड, बर्मा, इन्डोनेशिया आदि अनेक देशों में सदियों पूर्व ही हो गया था। इस प्रकार राम एक ऐसे जननायक हैं, जो देवता के रूप में प्रतिष्ठित होने के साथ-साथ लोकमानस में भारत की सांस्कृतिक पहचान के रूप में भी स्थापित हैं।

उन्हीं के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाने वाली रामनवमी पूरे देश में न केवल एक धार्मिक पर्व के रूप में मान्यता प्राप्त है, अपितु देश की सांस्कृतिक धरोहर के स्मरण का लोकपर्व भी बन गयी है। राम के चरित्र की यह विशेषता है कि उन्होंने उत्तरप्रदेश में अयोध्या में जन्म लिया, किन्तु पूरे भारत में विचरण कर उत्तर और दक्षिण को अपनी जीवनकथा में अविभाज्य रूप से जोड़ लिया। वनवास की अवधि में वे दण्डकारण्य को पार कर मध्यप्रदेश होते हुए न केवल दक्षिण सागर के छोर तक पहुँचे, अपितु वहाँ भी सेतु बना कर लंका पर विजय कर आये। इस प्रकार उत्तर भारत और दक्षिण भारत के सांस्कृतिक सेतु भी बन गये। इसीलिये उनकी आराधना उत्तर और दक्षिण में समान रूप से होती है। तभी तो राम की जन्मतिथि रामनवमी जो चैत्र शुक्ल पक्ष में आती है, सारे भारत में विभिन्न परंपराओं के साथ मनाई जाती है।

रामनवमी से संबद्ध विभिन्न सांस्कृतिक परंपराएँ अब तो जानी पहचानी हो गयी हैं। चूँकि राम की जन्मस्थली अयोध्या है, अत: वहाँ विशेष आयोजन के साथ रामनवमी पर्व मनाया जाता है। वहाँ के मंदिरों में रामजन्मोत्सव के उपलक्ष में मेला भरता है। भक्तगण इस दिन व्रत रखते हैं, राम की मूर्ति को पंचामृत स्नान कराया जाता है और विशेष आरती होती है। श्री रंग मंदिर आदि सभी मंदिरों में यह पर्व अति उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह उल्लेखनीय है, कि राम और कृष्ण इन दो विभूतियों का जन्म क्रमश: दिन के मध्य में और रात्रि के मध्य में हुआ माना जाता है। जिस प्रकार कृष्ण का जन्म जन्माष्टमी को ठीक मध्यरात्रि में हुआ था, उसी प्रकार राम का जन्म रामनवमी को ठीक मध्याह्न के समय हुआ था। इसीलिये जिस प्रकार जन्माष्टमी को कृष्णमंदिरों में आधी रात को जन्मोत्सव मनाया जाता है, उसी प्रकार रामनवमी को मध्याह्न में जन्मसमारोह आयोजित किया जाता है। अयोध्या में बधावा गाया जाता है। यह माना जाता है कि इसी दिन अर्थात् रामनवमी को ही जिस दिन पुनर्वसु नक्षत्र था और शुक्रवार था भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म भी दशरथ के राजमहलों में हुआ था। इसलिये इस दिन उनके जन्मोत्सव भी मनाये जाते हैं।

उत्तर भारत में जिस प्रकार आश्विन मास में अर्थात् विजयदशमी के पूर्व रामलीलाएँ होने लगती हैं, उससे लगता है कि विजयदशमी या आश्विन शुक्ल के नवरात्र रामकथा से संबद्ध पर्व हैं, जबकि वस्तुत: ऐसा नहीं है।

विजयदशमी को कुछ क्षेत्रों में कुछ विद्वानों ने किसी समय राम की रावण पर विजय की तिथि बतला दिया होगा। इसी आधार पर उत्तर भारत में दशहरे पर जगह जगह के पुतले जलाये जाने लगे, क्योंकि इससे पूर्व रामलीला होती है, जिसमें उस दिन रावण पर विजय का दृश्य दिखला कर उसे जलाने का औचित्य बन सकता है। रामलीला दशहरे के मौके पर हो, यह परंपरा मुख्यत: साकार हुई। अन्य अनेक स्थानों पर रामनवमी के अवसर पर अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त रामलीलाएँ होती रही हैं। चित्रकूट आदि की रामलीलाओं का समय आज भी यही रामनवमी और चैत्र शुक्ल पक्ष है।

अनेक विद्वानों ने वाल्मीकीय रामायण और अन्य प्राचीन ग्रंथों के प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि विजयदशमी या दशहरे का राम की रावण पर विजय से कोई संबंध नहीं है। रावणवध दशहरे को नहीं हुआ था अपितु चैत्र मास में हुआ था, ऐसा प्रमाणों से पुष्ट होता है। अनेक रामायण रामकथा की तिथियों का विवेचन करने हेतु लिखी गई थीं, जिनमें अग्निवेश रामायण प्रमुख है। इस रामायण के अनुसार चैत्र मास में रावणवध हुआ था और वैशाख में राम का राज्याभिषेक । जो भी हो, रामनवमी के अवसर पर रामलीलाओं की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, ऐसा प्रतीत होता है।

पारंपरिक मान्यता यह है कि राम त्रेतायुग में हुए थे। उससे अगले द्वापर युग में कृष्ण हुए थे। इस दृष्टि से राम का युग कृष्ण के युग से लाखों वर्ष पूर्व माना जाता है। हमारे पंचांगों में राम और कृष्ण के अवतारों का काल प्रतिवर्ष लिखा जाता है। इस मान्यता के अनुसार राम आज से कोई आठ लाख अस्सी हजार वर्ष पूर्व हुए माने जाते हैं, जबकि कृष्ण कोई पाँच हजार वर्ष पूर्व। आधुनिक शोध विद्वानों के अनुसार रामकथा का परिवेश अर्थात् रामायण का काल अथवा साकेत या अयोध्या का समय पुरातात्विक उत्खनन आदि के साक्ष्यों के आधार पर ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व से लेकर ईसा पूर्व एक हजार वर्ष तक ले आया जाता है। राम का अवतार कभी भी हुआ हो, जनमानस में उनका सिंहासन शताब्दियों से प्रतिष्ठित है और आज भी रामनवमी के दिन उनका जन्मोत्सव मना कर सारा भारत अपने आपको इसी सदियों पुरानी परंपरा से जोड़ लेता है।